कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 08 नवम्बर, 2024

कृषि वानिकी में मेलिया दुबिया की भूमिका

विनीता बिष्ट
सहायक प्रोफेसर, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बांदा, उत्तर प्रदेश- 210001
E-mail: jyotivinita89@gmail.com

मेलिया दुबिया को आमतौर पर मालाबार नीम महा नीम गोरा नीम या बरमा ढेक के नाम से जाना जाता है। यह सबसे महत्वपूर्ण औद्योगिक वृक्ष प्रजातियों में से एक है जिसका हाल के दशकों में भारतीय उपमहाद्वीप में तेजी से विस्तार हुआ है। एम. डुबिया उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का एक पेड़ है जिसकी खेती मुख्य रूप से इसके व्यापक रूप से महत्वपूर्ण औद्योगिक और औषधीय गुणों के लिए की जाती है। यह मेलियासी परिवार से संबंधित है। यह पूरे भारत में वितरित किया जाता है (जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और सिक्किम को छोड़कर)। यह सालाना 23-43 डिग्री सेल्सियस के तापमान और 1800 मीटर तक की ऊंचाई पर उगता है, और 750-1500 मिमी तक की वार्षिक वर्षा में अच्छी तरह से बढ़ता है, जिसके लिए मिट्टी के पीएच की सीमा 5.5 से 7 तक होती है। फूल उभयलिंगी होते हैं ऊपरी भाग में टर्मिनल पुष्पगुच्छों पर लगते हैं। धुरी और छोटी पत्तियाँ। फूल जनवरी से मार्च तक आते हैं, फल नवंबर से फरवरी तक लगते हैं। ये पेड़ रेतीली दोमट लाल और लैटेराइट मिट्टी में अच्छी तरह से उगते हैं। जहां वार्षिक वर्षा 800 मिमी और उससे अधिक होती है।

बीज संग्रहण प्रसंस्करण और नर्सरी तकनीक

बीज प्रसंस्करण और पूर्व उपचार: रिपोर्ट बताती है कि मेलिया में अंकुरण बहुत खराब है। IFGTB के अध्ययनों से पता चलता है कि बिना किसी पूर्व उपचार के अंकुरण 60 प्रतिशत तक हो सकता है। बुवाई से पहले तैरते हुए बीजों को निकालने के लिए डूप को पानी में भिगोना चाहिए।

नर्सरी में बीज बोना: मार्च-अप्रैल के दौरान बीज बोना सबसे अच्छा होता है। साफ और सूखे बीजों को खुली नर्सरी क्यारियों में ड्रिल की गई लाइनों में 5 सेमी की दूरी पर बोना चाहिए। बीज रेत में अंकुरित नहीं होते हैं। उन्हें मिट्टी में बोना चाहिए 2 अनुपात 1 में खेत की खाद का माध्यम। 1 अनुपात 1 भी अपनाया जा सकता है। एक मानक नर्सरी क्यारी के लिए लगभग 1500 की संख्या वाले लगभग 6-7 किलोग्राम सूखे डूप की आवश्यकता होती है। बोए गए बीजों को नियमित रूप से, दिन में दो बार पानी देने की आवश्यकता होती है। उन जगहों पर जहाँ दिन का तापमान बहुत अधिक नहीं होता है या जहाँ नर्सरी क्यारियाँ छाया में होती हैं माध्यम में तापमान बनाए रखने के लिए क्यारी को तिरपाल की चादर से ढक देना चाहिए। अंकुरण 90 दिनों के भीतर होता है।

वानस्पतिकप्रसार: युवा तने की कटिंग और कॉपिस शूट 1000 - 2000 पीपीएम आईबीए (तरल फॉर्मूलेशन के प्रति अच्छी प्रतिक्रिया देते हैं। पुराने पेड़ों से कॉपिस रूटिंग के लिए बेहतर प्रतिक्रिया देते हैं। प्रसार के लिए पेंसिल मोटी कटिंग लेने की आवश्यकता होती है। पतली टहनियाँ आसानी से जड़ सड़न के लिए अतिसंवेदनशील होती हैं। टहनियों को रेत के माध्यम पर रखा जा सकता है और दिन में दो बार पानी दिया जा सकता है। जल निकासी का प्रावधान जरूरी है क्योंकि जलभराव टहनियों को नष्ट कर देता है। कटिंग की जड़ें जमाने में मौसम भी एक प्रमुख भूमिका निभाता है। शुष्क मौसम जड़ें जमाने के लिए अनुकूल होता है। लगभग 75 प्रतिशत जड़ें प्राप्त की जा सकती हैं।

वृक्षारोपण प्रबंधन

5 गुणा 5 मीटर की दूरी इष्टतम है जबकि 8 गुणा 8 मीटर की दूरी आदर्श है। उर्वरकों के प्रयोग से वृद्धि को बढ़ावा मिलता है। पेड़ों की तेजी से वृद्धि के लिए नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है। शुरुआती तीन वर्षों के लिए तीन महीने में एक बार दैनिक पानी और उर्वरकों के प्रयोग से शुरुआती वृद्धि में तेजी आती है। वर्षा आधारित परिस्थितियों में वृद्धि धीमी होती है (लगभग 100% कम। पेड़ की शाखाएँ ज़मीन से 8-10 मीटर की दूरी पर होती हैं। हर छह महीने में छंटाई करने से शाखाओं का बढ़ना नियंत्रित होता है। तना सीधा गोल बिना किसी गांठ और बिना किसी सहारे के होता है।

कृषि वानिकी पद्धतियाँ

मेलिया एक अच्छी कृषि वानिकी प्रजाति है और इसकी खेती के दौरान कई तरह की फसलें उगाई जा सकती हैं। मूंगफली मिर्च हल्दी उड़द पपीता केला खरबूजा गन्ना जैसी फसलों की खेती अंतर-फसलों के रूप में सफलतापूर्वक की जा रही है। यह प्रजाति मेड़ों पर लगाए जाने पर बहुत अच्छा प्रदर्शन करती है और चार साल के भीतर कटाई योग्य आकार प्राप्त कर लेती है।

उपज

15 साल के अंत में पेड़ का आयतन 15 घन फीट हो जाता है और 5वें साल से 350 रुपये प्रति घन फीट की आय होती है। गहन प्रबंधन के दौरान विकास दर 20 से 25 सेमी प्रति वर्ष और अप्रबंधित वृक्षारोपण के दौरान 6 से 8 सेमी प्रति वर्ष होती है। 5 साल के समय में इससे 12 से 15 घन फीट (4-5 घन मीटर लकड़ी

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 08 नवम्बर, 2024

मिलने की उम्मीद है। वर्तमान में मेलिया 50-120 सेमी परिधि वाले बिलेट के लिए 7300 रुपये प्रति टन और 120 सेमी से अधिक परिधि वाले पेड़ों के लिए 370 रुपये प्रति सीएफटी (2 घन मीटर की दर से लकड़ी प्राप्त करता है।

उपयोग

यह एक अच्छी द्वितीयक लकड़ी है और प्लाईवुड उद्योग के लिए सबसे पसंदीदा प्रजाति है। लकड़ी का उपयोग पैकिंग केस छत के तख्तों निर्माण उद्देश्यों कृषि उपकरणों पेंसिल माचिस की डिब्बियों स्प्लिट्स कैटमारन संगीत वाद्ययंत्रों और चाय के डिब्बों के लिए भी किया जाता है क्योंकि लकड़ी अपने आप में दीमक रोधी होती है। इस प्रकार, इसकी बहुउद्देशीय उपयोगिताओं के कारण इस प्रजाति के लिए एक तैयार और सुनिश्चित बाजार है। यह प्रजाति अत्यधिक अनुकूलनीय भी है। प्लाईवुड उद्योगों में इस प्रजाति की बहुत मांग है।

● ● ●